प्रेम और सौन्दर्य

कवि परिचय :

घनानन्द

घनानन्द हिन्दी की रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि हैं। इनका जन्म काल 1658 ई. और मृत्यु 1739 ई. में मानी जाती है। हिन्दी में घनानन्द और आनन्दधन नाम के दोनों रचनाकारों को पहले एक ही माना जाता था। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने दोनों कवियों की भिन्नता स्पष्ट कर दी।

घनानन्द की रचनाएँ अधिकतर मुक्तक रूप में प्राप्त होती हैं। इनकी कतिपय रचनाओं का सर्वप्रथम प्रकाशन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'सुन्दरी तिलक' पत्रिका में कराया था। सन् 1870 में उन्होंने 'सुजान शतक' नाम से इनके 119 कवित्त प्रकाशित किए। इसके पश्चात् जगन्नाथ दास रत्नाकर ने सन् 1897 में इनकी 'वियोग बेलि' और 'विरह-लीला' नागरी प्रचारणी सभा द्वारा प्रकाशित की। 'घनानन्द कवित्त', 'कवित्त संग्रह', 'सुजान-विनोद', 'सुजान हित', 'वियोग-बेलि', 'आनन्दघन जू' , 'इश्क लता', 'जमुनाजल' और 'वृन्दावन सत' आदि इनकी रचनाएँ हैं।

घनानन्द ने सुजान का अपने पदों में इतनी तन्मयता से उल्लेख किया है कि उसका आध्यात्मीकरण हो गया है। सुजान का उनकी प्रेयसी होना ही अधिक सिद्ध होता है। सुजान को शृंगार पक्ष में नायक और भक्ति पक्ष में कृष्ण मान लेना उचित होगा।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घनानन्द को रीतिमुक्त काव्यधारा का श्रेष्ठ कवि कहा है। घनानन्द का विरह-वर्णन सूरदास के भ्रमरगीत के समकक्ष है। उनकी ब्रजभाषा सजीव, लाक्षणिक, व्यंजना पूर्ण तथा व्याकरण सम्मत है। उनकी भाषा फारसी काव्य से अनुप्राणित होते हुए भी मौलिक है। कवि ध्वन्यात्मक शब्दों के प्रयोग में पटु है। इनकी रचनाओं में अनुप्रास एवं रूपक का शोभन प्रयोग हुआ है। इस प्रकार भाषा, छन्द, शैली, अलंकार और उसके अनुप्रयोग की दृष्टि से घनानन्द की रचनाएँ अत्यन्त सरस एवं प्रौढ़ हैं।

रत्नाकर

कवि परिचय :

रत्नाकर का जन्म 1866 ई. में हुआ था। उन्होंने क्वीन्स कॉलेज, बनारस से 1891 में बी.ए. पास किया। एल.एल.बी. और एम.ए. (फारसी) का अध्ययन माता की मृत्यु के कारण पूरा नहीं कर पाये। 21 जून सन् 1932 को हरिद्वार में आपका देहावसान हुआ।

'हिंडोला', 'कलकाशी', 'शृंगार लहरी', 'गंगा तथा विष्णु लहरी', 'रत्नाष्टक', 'वीराष्टक', 'गंगावतरण', 'उद्धवशतक', आदि इनकी कृतियाँ हैं। आपके द्वारा पोप के 'एसेज़् आन क्रिटिसिज्म' का हिन्दी अनुवाद किया गया जो 'समालोचनादर्श' नाम से प्रकाशित हुआ।

रत्नाकर द्वारा लिखे गए साहित्यिक ऐतिहासिक लेखों, मौलिक कृतियों की रचना और महत्वपूर्ण ग्रंथों के संपादन से उनके गंभीर अध्ययन, मौलिक प्रतिभा और सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि का पता चलता है। उन्होंने 'साहित्य सुधा निधि' तथा 'सरस्वती' पत्रिकाओं का संपादन किया। रसिक मण्डल, प्रयाग तथा काशी नागरी प्रचारणी सभा की स्थापना व विकास में योगदान दिया।

'रत्नाकर' की भक्ति का दार्शनिक आधार वल्लभ और चैतन्य की समन्वित विचारधारा है। वह राधाकृष्ण को उपास्य मानकर वैष्णव धर्म की उदारता लेकर चले हैं। वे सामाजिक कुरीतियों एवं धार्मिक रूढ़ियों का उन्मूलन कर स्वस्थ परंपराओं का पुनरुद्धार करना चाहते हैं। कविता का धरातल वैचारिक, अभिव्यक्ति रीत्यनुमोदित और आत्मनिष्ठ है। वाणी की अतिशय अलंकृति भावाभिव्यंजन में बाधक नहीं होती। आपने कथात्मक, वर्णनात्मक एवं निबन्धात्मक, प्रबन्ध और गेय, पाठ्यसूक्ति तथा प्रबन्ध मुक्तक आदि शैलियों के सफल प्रयोग किए हैं। रत्नाकर की कृतियाँ भक्ति, शृंगार, वीर तथा नीति प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे भावना से रससिद्ध, अभिरुचि से अलंकारवादी और प्रवृत्ति से समन्वयवादी हैं।

केन्द्रीय भाव -

विश्व का शक्ति केन्द्र प्रेम है। प्रेम के कारण ही विश्व में सौन्दर्य की व्याप्ति है। प्रेम से ही विश्व में आकर्षण है। कहा गया है कि प्रेम ही ईश्वर है; प्रेम में ईश्वर का निवास है! हमारी सम्पूर्ण सामाजिकता का आधार प्रेम है। प्रेम का क्षेत्र व्यापक और विस्तृत है। प्रेम की परिधि में जड़ चेतन भी समाहित हो जाते हैं।

प्रेम के मूल में राग का भाव है। राग ही अनुराग बनता है। प्रेम हमारी उस संवेदना का विस्तारी भाव है जिसके अन्तर्गत हम अपने भीतर दूसरों की आत्मीय उपस्थिति का अनुभव करते हैं; उसकी कुशल-क्षेम के लिए प्रयत्नरत रहते हैं। प्रेम के सूत्र अनेक तरह के संबंधों की सर्जना करते हैं। हमारे जितने भी संबंध-भाव हैं, उनमें प्रेम की ही भूमिका है।

सामान्यत: साहित्य के अन्तर्गत प्रेम के समस्त संबंध भावों का चित्रण हुआ है किन्तु दाम्पत्य प्रेम का उल्लेख इसमें विस्तार से किया गया है। दाम्पत्य-प्रेम के अन्तर्गत नारी-पुरुष के पारस्परिक आकर्षण का भाव प्रबल होता है। इसके अन्तर्गत ही सौन्दर्य का महत्व है। सौन्दर्य में रूप, चेष्टा और शील का समावेश है। इन सबकी सुन्दरता ही सौन्दर्य का विधान करती है।

हिन्दी साहित्य में प्रेम का व्यापक वर्णन प्राप्त होता है। जायसी ने तो मनुष्य के प्रेम को ही बैकुण्ठ माना है- ''मानुष प्रेम-सदा बैकुंठी।'' तुलसी ने प्रेम को ईश्वर को प्रकट करने वाला कहा है- ''हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रकट होहि मैं जाना।''

साहित्य में प्रेम को शृंगार के अन्तर्गत स्थान प्राप्त है। शृंगार में संयोग और वियोग- इन दो भेदों को समाहित किया गया है। रीतिकाल तक आते-आते प्रेम के क्षेत्र में शारीरिक सौन्दर्य अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इस काल में कुछ गिने-चुने कवियों में ही प्रेम की परिशुद्ध भावना के दर्शन होते हैं। घनानन्द ऐसे कवियों में से एक हैं।

घनानन्द का प्रेम अनुभूतिपरक है। वे वियोग शृंगार के कवि हैं। प्रिय की स्मृतियों का भावना-ग्राही रूप उनके काव्य का प्राण-केन्द्र है। प्रस्तुत पदों में वे प्रेम के स्वरूप की चर्चा करते हैं। वे मानते हैं कि प्रेम सच्चे हृदय से ही किया जाता है। वे बार-बार उसके रूप को, चेष्टाओं को और उसके स्वभाव को याद करते हैं। प्रिय द्वारा किए गए उपेक्षा-भाव की चर्चा करते हुए वे प्राकृतिक उपादानों के रूप में कोयल, वर्षा और बादलों को विरह के उद्दीपकों की तरह चित्रित करते हैं। घनानन्द की उपमाएँ एकदम नवीन हैं।

रीतिकाल और आधुनिक काल की देहरी पर स्थित कवि जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने भी वियोग शृंगार को अपने काव्य का आधार बनाया है। कृष्ण और गोपियों के प्रेम का भावनामय वर्णन उनकी संकलित कविता में है। गोपियों में कृष्ण द्वारा लिखे गए पत्र को पढ़ने की आतुरता, उनकी विरह विगलित मनोदशा, उनका कृष्ण के प्रति अतिशय समर्पण का आलंकारिक वर्णन किया है। रत्नाकर के पदों में शब्दालंकार के साथ रूपक और प्रतीकों का भी उत्कर्षशाली प्रयोग है।

इन दोनों कवियों की कविता में प्रेम की अनुभूतियों का लोकोत्तर पक्ष प्राप्त होता है।

घनानंद के पद

आपुहि तो मन हेरि हँसे,
तिरछे करि नैननि नेह चाव मैं।
हाय दई! सुविसारि दई सुधि,
कैसी कएँ, सौ कहौ कित जावँ मैं।
मीत सुजान, अनीति कहा यह,
ऐसी न चाहिए प्रीति के भाव मैं।
मोहन मूरति देखिबें को
तरसावत हौ बसि एक ही गाँव में।। 1 ॥

पहिले अपनाय सुजान सनेह सौं,
क्यों फिरि नेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार है धार मँझार,
दई, गहि बाहँ न बोरियै जू।।
घन आनन्द आपने चातक कौं,
गुन बाँधि लै मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस,
बिसास में यों विष घोरियै जू।। 2 ॥

कारी कूरि कोकिल! कहाँ को बैर काढ़ति री,
कूकि कूकि अबहीं करेजो किन कोरि लै।
पैड़े परे पापी ये कलापी निसि-द्यौस ज्यों ही,
चातक! रे घातक ह्वै तू हू कान फोरि लै।।
आनंद के घन प्रानजीवन सुजान बिना,
जानि कै अकेली सब घेरो दल जोरि लै।
जोलौं करैं आवन विनोद-बरसावन वे,
तो लौं रे डरारे बज मारे घन! घोरि लै।। 3 ॥

– घनानंद

उद्धव-प्रसंग

भेजे मनभावन के उद्धव के आवन की
सुधि ब्रज-गाँवनि में पावन जबैं लगीं।
कहैं 'रतनाकर' गुवालिनि की झौरि-झौरि
दौरि-दौरि नंद-पौरि आवन तबै लगीं।।
उझकि-उझकि पद-कंजनि के पंजनि पै
पेखि-पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगीं।
हमकौं लिख्यौ है कहा, हमकौं लिख्यौ है कहा
हमकौं लिख्यौ है कहा कहन सबै लगीं।।1।।

सुनि सुनि ऊधव की अकह कहानी कान
कोऊ थहरानी कोऊ थानहि थिरानी हैं।।
कहैं 'रतनाकर' रिसानी, बररानी कोऊ
कोऊ बिलखानी, बिकलानी, बिथकानी हैं।।
कोऊ सेद-सानी, कोऊ भरि दृग-पानी रहीं
कोऊ घूमि-घूमि परीं भूमि मुरझानी हैं।
कोऊ स्याम-स्याम कह बहकि बिललानी कोऊ
कोमल करेजौ थामि सहमि सुखानी हैं।।2।।

आए हौ सिखावन कौं जोग मथुरा तैं तोपै
ऊधौ ये बियोग के बचन बतरावौ ना।
कहैं 'रतनाकर' दया करि दरस दीन्यौ
दुख दरिबै कौं, तोपै अधिक बढ़ावौ ना।।
टूक-टूक ह्वैहै मन-मुकुर हमारौ हाय
चूकि हूँ कठोर बैन-पाहन चलावौ ना।
एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्‌यौ मोहिं
हिय में अनेक मनमोहन बसावौ ना।।3।।

छावते कुटीर कहूँ रम्य जमुना कै तीर

गौन रौन-रेती सों कदापि करते नहीं।

कहैं 'रतनाकर' बिहाइ प्रेम-गाथा गूढ़

स्रोंन रसना मैं रस और भरते नहीं।।

गोपी ग्वाल बालनि के उमड़त आँसू देखि

लेखि प्रलयागम हूँ नैंकु डरते नहीं।

होतौ चित चाब जौ न रावरे चितावन को

तजि ब्रज-गाँव इतै पाँव धरते नहीं।।4।।

– जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. चातक को घातक क्यों कहा गया है?
2. विश्वास में विष घोलने का काम किसने किया है?
3. मथुरा में योग सिखाने कौन गए थे?
4. नंद के आँगन में गोपियाँ क्यों एकत्र हुईं?
5. कुटीर कौन–सी नदी के किनारे बनाने की बात कही गई है?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. 'तिरछे करि नैननि नेह के चाव मैं' का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. घनानन्द सुजान को क्या उलाहना देते हैं?
3. रत्नाकर की गोपियों के मन में कौन बसा है? उनके विचार स्पष्ट कीजिए।
4. रत्नाकर के अनुसार गोपी–ग्वालबालों की मनोदशा को समझाइए।
5. उद्धव के ब्रज आगमन की गोपियों पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. संकलित कविता के आधार पर ''प्रेम और सौन्दर्य'' पर घनानंद के विचार लिखिए।

2. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(अ) पहिले अपनाय सुजान सनेह सौं,
क्यों फिर नेह कै तोरियै जू।

निरधार अधार है धार मँझार,
दई, गहि बाहँ न बोरियै जू

(आ) आए हौं सिखावन कौं जोग मथुरा तैं तोपैं
ऊधो ये वियोग के बचन बतरावौ ना।
कहैं 'रत्नाकर' दया करि दरस दीन्यौ
दुख दरिबै कौ, तोपै अधिक बढ़ावौ ना।

3. घनानंद को 'प्रेम की पीर' कहना कहाँ तक उचित है?

4. 'उद्धव शतक' के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'रत्नाकर को मार्मिक स्थलों की भलीभाँति पहचान है।'

काव्य सौन्दर्य

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए –

नेत्र, मार्ग, आनंद, दया, कठोर

2. घनानंद के संकलित छंदों में कौन-सा रस है?

3. रत्नाकर की भाषा के संबंध में अपने विचार लिखिए।

4. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए –

(अ) निरधार अधार है धार मँझार

(आ) हिय में अनेक मनमोहन बसावौ ना।

(इ) टूक-टूक ह्वै है मन-मुकुर हमारौ हाय।

(ई) एक मनमोहन तौ बसिकै उजार्‌यो मोहिं।

(उ) उझकि-उझकि पद-कंजनि के पंजनि पै।

ध्यान दीजिए–

सहज सरल रघुवर बचन, कुमति कुटिल करि जान
चलइ जोंक जिमि वक्र गति, जद्यपि सलिल समान

उपर्युक्त उदाहरण ध्यान से पढ़िए इन पंक्तियों में 'दोहा' छंद का प्रयोग हुआ है। छंद कविता की गीतात्मकता में वृद्धि करते हैं। कविता के रचना-विधान को 'छंद' कहते हैं। किसी निश्चित क्रम में गति और यति का निर्वाह करते हुए संगीतमय या भावपूर्ण जो रचना की जाती है, उसके रचना-विधान का नाम छंद है।

छंद दो प्रकार के होते हैं –

- **मात्रिक** – मात्राओं की गिनती निश्चित रहती है।
- **वर्णिक** – वर्णों की संख्या एवं रूप निश्चित रहता है, मात्राएँ नहीं।

मात्रिक छंद

छप्पय-

इस विषम मात्रिक छंद में छह चरण होते हैं। इसके प्रथम चार चरण रोला और दो चरण उल्लाला के होते हैं। रोला के प्रत्येक चरण में 11-13 की यति पर 24 मात्राएँ और उल्लाला के हर चरण में 15-13 की यति पर 28 मात्राएँ होती हैं-

उदाहरण -

जहाँ स्वतन्त्र विचार न बदलें मन में मुख में,
जहाँ न बाधक बनें सबल निबलों के सुख में।
सबको जहाँ समान निजोन्नति का अवसर हो।
शान्तिदायिनी निशा, हर्षसूचक वासर हो॥
सब भाँति सुशासित हों जहाँ, समता के सुखकर नियम॥
बस उसी स्वशासित देश में जागें हे जगदीश हम।

रोला + उल्लाला = छप्पय

वर्णिक छंद

कवित्त-

इस वर्णिक छंद के प्रत्येक चरण में 16 और 15 के विराम से 31 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण का अंतिम वर्ण गुरु होता है।

उदाहरण -

सच्चे हो पुजारी तुम प्यारे प्रेम मंदिर के,
उचित नहीं है तुम्हें दुख से कराहना,
करना पड़े जो आत्म त्याग अनुराग वश,
तो तुम सहर्ष निज भाग्य की सराहना।
प्रीति का लगाना कुछ कठिन नहीं है, सखे,
किन्तु हैं कठिन नित्य नेह का निबाहना,
चाहना जिसे हैं तुम्हें चाहिए सदैव उसे,
तन मन प्राण से प्रमोद युत चाहना।

सवैया-

बाईस से लेकर छब्बीस वर्ण तक के छंद को सवैया कहते हैं। ये अनेक प्रकार के होते हैं -

मत्तगयन्द, दुर्मिल, मदिर, चकोर, किरीट आदि।

मत्तगयन्द सवैया -

इस वर्णिक छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में सात भगण और दो गुरु के क्रम से 23 वर्ण होते हैं। इसे मालती सवैया भी कहते है।

उदाहरण–

धूरि भरे अति शोभित श्यामजु, तैसि बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरै अगना, पग पैंजनि बाजति पीरि कछौटी।

वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
कागहिं भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सौ ले गयौ माखन रोटी।।

दुर्मिल –

इस वर्णिक छंद के प्रत्येक चरण में 24 वर्ण होते हैं। इस छंद को 'चंद्रकला' भी कहते हैं।

उदाहरण –

पुर तैं निकसी रघुवीर वधू धरि-धीर दये मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गये मधुराधर वै।
फिर बूझति हैं चलनौ अब केतिक पर्णकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।

5. छप्पय किन मात्रिक छंदों के योग से बनता है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. ब्रजभाषा के माधुर्य को जानने के लिए भक्ति काल, रीतिकाल के अन्य कवियों की रचनाएँ पढ़िए।
2. 'सूरसागर' ग्रंथ से इसी भाव वाले अन्य पदों को छाँटकर पढ़िए।
3. रीतिकाल की तीनों धाराओं (रीतिबद्ध, रीति सिद्ध एवं रीति मुक्त) के विषय में शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।

शब्दार्थ

घनानन्द के पद

नैननि = नेत्र, *नेह* = प्रेम, *अनीति* = अन्याय, नीति के विरुद्ध, *तरसावत* = ललचाना, तरसाना, *धार-मँझार* = धारा के मध्य में, *किन कोरि लै* = खरोंच कर निकाल क्यों नहीं लेती, *पैड़े परै* = पीछे पड़े हैं, *कलापी* = मोर, *बजयारे* = वज्राहत, वज्र से मारा हुआ, बहुत दुष्ट, *घोरि* = गर्जना करना।

उद्धव प्रसंग

झौरि-झौरि = झुंड के झुंड, *दौरि-दौरि* = दौड़-दौड़कर, *नंद पौरि* = नंद के आँगन (निवास), *उझकि - उझकि* = उझक-उझक कर या ऐड़ी उठा-उठाकर देखना, *थहरानी* = काँप गई। *थानहि* = स्थान पर ही, *थिरानी* = स्थिर हो जाना, जड़ हो जाना, *विथकानि* = व्यथित (शिथिल), *सेद* = स्वेद (पसीना), *जोग* = योग शास्त्र, *टूक-टूक* = टुकड़े-टुकड़े, *मन - मुकुर* = मन रूपी दर्पण, *बैन - पाहन* = वचनों के पत्थर। *छावते* = छबाते, बनाते, *कुटीर* = कुटिया, *चाब* = चाव से, रुचि से।

❋ ❋ ❋